उच्च शिक्षा से संबंधित चिंतन एवं शोध का त्रैमासिक जर्नल

रिसर्च लिंक

• वर्ष-2 • पूर्णांक-7
• जून-अगस्त -2003

कला, समाजविज्ञान, वाणिज्य एवं विज्ञान

Popular Literature : In the Shadows of Culture Industry	• Dr. Ashutosh Dubey
The Wasteland- A Critical Appraisal	• Dr. Ashok Sachdev
Fortitude the Name is Sarojni Naidu	• Dr. Gulshan Das & • Ku. Shabnam Das
Feminist Literary Theory	• Dr. Pankaja Acharya
The Panorama of Indian English Fiction	• Dr. Usha Jain
Theme of Partition in the Novels of Attia Hosain and Bapsi Sidhwa	• Dr. Neeta Sathe
Novel as History	• Dr. Prachi Dixit & • Lopamudra Bhattacharyya
	• Dr. Prachi Dixit & • Miss Kirti Konde
कालिदास के रूपकों में वक्षोऽभिनय	• डॉ. भावना श्रीवास्तव
धूमिल के काव्य में धर्म का स्वरूप	• डॉ.कोमल सिंह शार्वा
प्रकृति : साहित्य और विज्ञान	• डॉ. सरोज गुप्ता
समाजशास्त्रीय दृष्टि और उपन्यास	• डॉ.(श्रीमती) मधु जैन
नयी कहानी बनाम पुरानी कहानी	• श्रीमती अनामिका होलकर
भीष्म साहनी के उपन्यासों का कला पक्ष	• श्रीमती प्रतीक्षा शुक्ला
पंचायती राज व्यवस्था में उभरता हुआ नवीन राजनीतिक नेतृत्व (म.प्र. के विशेष संदर्भ में)	• डॉ. ममता चंद्रशेखर
क्षेत्रीयतावाद और स्वायत्ता की मांग	• डॉ. (श्रीमती) राजेश जैन
मानव अधिकार संरक्षण के समक्ष चुनौतियाँ	• डॉ. भारती भट्टाचार्य
पश्चिमी मध्यप्रदेश से मध्यकालीन पुरावशेष	• कौशलेन्द्र गुप्ता • डॉ. विनय श्रीवास्तव
भारत में स्वदेशी समाजशास्त्र की आवश्यकता	• डॉ.ध्रुवकुमार दीक्षित
अन्तर्विरोधों में कैद नारी-एक पुनरावलोकन	• श्रीमती सुचित्रा शर्मा
भारतीय संस्कृति-परिवर्तन की चुनौतियाँ	• श्रीमती ज्योति एस.उपाध्याय

उच्च शिक्षा से संबंधित चिंतन एवं शोध का त्रैमासिक जर्नल

रिसर्च लिंक

कला, समाजविज्ञान एवं वाणिज्य

● वर्ष-2 ● पूर्णांक-7

● जून-अगस्त -2003

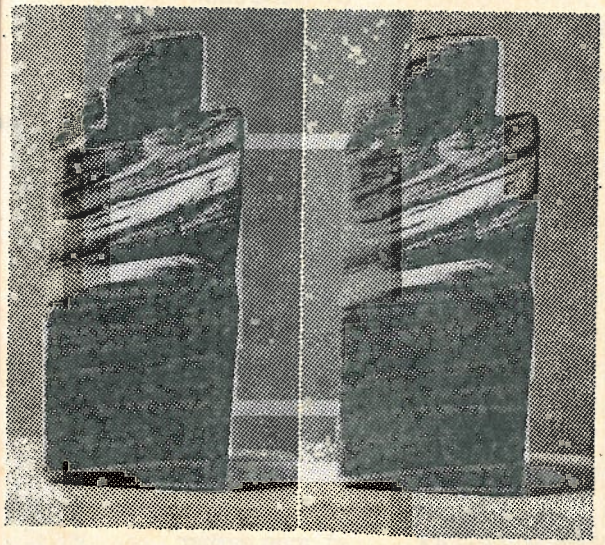

परामर्श

डॉ. प्रभातकुमार भट्टाचार्य ☐ डॉ. लोकेश अग्रवाल
☐ डॉ. नरेन्द्र मोहन ☐ डॉ. प्रताप सहगल

संपादक

डॉ. एलेश सोनी

सम्पादन-सहयोग

डॉ. प्राची दीक्षित ☐ डॉ. सुब्रतो गुहा
डॉ. एस.बी. सिंह ☐ सत्यम् सोनी

सज्जा - आकल्पन

संतोष जड़िया

क्षेत्रीय प्रतिनिधि

डॉ. शशि शर्मा (शिलांग)
डॉ. रचना शर्मा (बनारस)
डॉ. ए.ए. खान (दुर्ग)
डॉ. श्रीमती राजेश जैन (सागर)
डॉ. अनिता शिंदे(भोपाल)
श्रीमती नलिनी भार्गव (गुड़गाँव)
डॉ. मंजु शर्मा (धार)
डॉ. दीपाली शर्मा (उज्जैन)
डॉ. सुचित्रा शर्मा (भिलाई)
डॉ.बी.आर.नलवाया (बड़वाह)
प्रो.उषा मसीह (महू)
श्री ललित पानेरी (उज्जैन)

■ डॉ. विनोद शर्मा (रायपुर)
■ डॉ. गुलशन दास (बिलासपुर)
■ प्रो. शिवकुमार शर्मा (रायपुर)
■ प्रो. संतोष धुर्वे (सिहोर)
■ डॉ. प्रतिभासिंह (भोपाल)
■ डॉ. पद्मसिंह पटेल (महिदपुर)
■ डॉ. अमिता सिंघल (खण्डवा)
■ डॉ. ज्योति प्रसाद (ग्वालियर)
■ डॉ. संजय जैन (भोपाल)
■ डॉ.एस.बी.हसन (बैतूल)
■ प्रो.अनिता राय बाथम (महू)
■ डॉ. मीना वर्मा (इंदौर)

- रिसर्च लिंक का प्रकाशन-प्राध्यापकों का, प्राध्यापकों के द्वारा, प्राध्यापकों के लिए-एक अव्यावसायिक सहयोगी प्रयास।
- संपादन-प्रकाशन एवं संचालन अवैतनिक।
- रिसर्च लिंक संबंधी सभी विवाद केवल इन्दौर न्यायालय के अधीन होंगे।
- रिसर्च लिंक में प्रकाशित शोध/विचार पत्रों में व्यक्त चिंतन एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखकों के हैं। उससे पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

संपादकीय/प्रबन्ध प्रकाशन कार्यालय

11, वर्द्धमान अपार्टमेंट, ओल्ड पलासिया,
(मेडिकेअर के पास), इन्दौर - 452 018
फोन : 0731 - 2498755

	व्यक्तिगत	संस्थागत
मूल्य	: 50/- रुपये	75/- रुपये
वार्षिक	: 200/- रुपये	300/- रुपये
द्विवार्षिक	: 350/- रुपये	550/- रुपये

Two Years' Subscription :
50 $ For Foreign Subscriber & Contributors.
e-mail address : researchlink @ rediffmail.com
researchlink @ hotmail.com

'रिसर्च लिंक' की सदस्यता के शुल्क का भुगतान नकद, मनीआर्डर अथवा डी.डी. के द्वारा किया जा सकता है।

॥ इस अंक में ॥

संस्कृत साहित्य

- कालिदास के रुपकों में वक्षोऽभिनय / 9 — डॉ. भावना श्रीवास्तव

Egnlish Literature

- Popular Literature: In the Shadows of Culture Industry / 12 — Dr. Ashutosh Dubey
- The Wasteland- A Critical Appraisal /16 — Dr. Ashok Sachdeva
- Fortitude the Name is Sarojni Naidu /19 — Dr. Gulshan Das & Ku. Shabnam Das
- Feminist Literary Theory /20 — Dr. Pankaja Acharya
- The Panorama of Indian- English Fiction /23 — Dr. Usha Jain
- Theme of Partition in the Novels of Attia Hosain and Bapsi Sidhwa /26 — Dr. Neeta Sathe
- 'Delhi : A Novel' & 'River of Fire' - The Historical Novels /29 — Dr. Prachi Dixit & Ku. Lopamudra Bhattacharyya
- Khushwant Singh - A Controversial Contemporary Writer /32 — Dr. Prachi Dixit & Miss Kirti Konde

हिन्दी साहित्य

- धूमिल के काव्य में धर्म का स्वरुप / 34 — डॉ.कोमल सिंह शार्वा
- प्रकृति : साहित्य और विज्ञान / 36 — डॉ. सरोज गुप्ता
- समाजशास्त्रीय दृष्टि और उपन्यास / 37 — डॉ.(श्रीमती) मधु जैन
- नयी कहानी बनाम पुरानी कहानी : एक अध्ययन / 39 — श्रीमती अनामिका होलकर
- भीष्म साहनी के उपन्यासों का कला पक्ष : एक विवेचन / 41 — श्रीमती प्रतीक्षा शुक्ला
- मध्यकाल में ब्रजभाषा का साहित्यिक भाषा के स्वरुप में विकास / 115 — डॉ.(श्रीमती) रामप्यारी धुर्वे

राजनीति विज्ञान

- पंचायती राज व्यवस्था में उभरता हुआ नवीन राजनीतिक नेतृत्व (म.प्र. के विशेष संदर्भ में) / 43 — डॉ. ममता चंद्रशेखर
- क्षेत्रीयतावाद और स्वायत्ता की मांग (पंजाब समस्या के संदर्भ में) / 45 — डॉ. (श्रीमती) राजेश जैन
- मानव अधिकार संरक्षण के समक्ष उभरती चुनौतियाँ / 47 — डॉ. भारती भट्टाचार्य

इतिहास

- पश्चिमी मध्यप्रदेश से उपलब्ध मध्यकालीन पुरावशेष / 49 — कौशलेन्द्र गुप्ता
- मन्दसौर जिले में अफीम की कृषि एवं उसका व्यवसाय / 52 — डॉ. विनय श्रीवास्तव

समाज शास्त्र

- भारत में स्वदेशी समाजशास्त्र की आवश्यकता / 54 — डॉ.ध्रुवकुमार दीक्षित
- अन्तर्विरोधों में कैद नारी-एक पुनरावलोकन / 56 — श्रीमती सुचित्रा शर्मा
- भारतीय संस्कृति-परिवर्तन की चुनौतियाँ / 58 — श्रीमती ज्योति एस.उपाध्याय

मनोविज्ञान

- आर्थिक विकास में मनोवैज्ञानिक कारकों की भूमिका / 60 — डॉ. रेखा बख्शी

गृह विज्ञान

- मध्यम वर्गीय उपभोक्ताओं की जागरुकता का स्तर (वृहत्तर ग्वालियर के उपभोक्ताओं के विशेष संदर्भ में) / 62 — डॉ. (श्रीमती) चरनजीत कौर, डॉ. (श्रीमती) ज्योति प्रसाद
- कानूनी अधिकार के प्रति महिलाओं में जागरुकता का अभाव एक विडम्बना / 64 — डॉ. कु. संध्या मुरे, कु. ऋचा श्रीवास्तव एवं डॉ. कामिनी जैन
- आवासीय परिसर में वास्तु अनुरुप वृक्ष-विन्यास / 65 — डॉ.(श्रीमती) मंजू शर्मा एवं डॉ.(श्रीमती) अपर्णा शर्मा
- नवोदय विद्यालय और शारीरिक विकास / 67 — डॉ.(श्रीमती) शारदा त्रिवेदी
- Omega-3 Fatty Acids in Health / 68 — Dr. Renu Bala Sharma
- सामान्य बालकों, फुटपाथी बालकों एवं बाल-श्रमिकों में उपलब्धि-अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन / 69 — प्रो.कु.अनिता राय बा ाम एवं डॉ.(श्रीमती) नसरीन रहमान शेख
- विकास - एक आर्थिक दृष्टिकोण / 113 — डॉ.(श्रीमती) उर्मिला विजयवर्गीय

अन्तर्विरोधों में कैद नारी-एक पुनरावलोकन

■ श्रीमती सुचित्रा शर्मा

विकास और प्रगति के चहुंमुखी आयाम तय करता भारत निरंतर निखरता जा रहा है। देश की आधी आबादी महिलाएँ भला पीछे कैसे हो सकती हैं ? पुरुषों के समकक्ष कदम से कदम बढ़ाती महिलाएँ हर क्षेत्र में अपने प्रवेश और उन्नति के शिखर को छूती सभी को चमत्कृत करती चली जा रही है। फिर वह अंतरिक्ष में उड़ान भरने वाली कल्पना चावला हो चाहे आम गृहिणी।

हरि अनंत हरि कथा अनंता की तरह स्त्रियों की स्थिति के इतने पहलू है कि बहुत संभव है अवलोकन संभव न हो, आज पुनरावलोकन की आवश्यकता है। किसी भी समाज में स्त्रियों की स्थिति के आकलन के लिए कम से कम 3 बातें आवश्यक हैं, उनका सामाजिक दर्जा, उनमें राजनीतिक स्वाधीनता और उनकी आर्थिक स्वतंत्रता।

परंपरागत समाज हो चाहे आधुनिक समाज, दोनों में ही महिलाओं की स्थिति उनकी भूमिका का आकलन पूर्व प्रचलित मापदण्डों के संदर्भ में ही किया जाता है। भारतीय समाज में महिलाओं को लेकर दोहरे मापदण्ड रहे हैं- एक ओर वह शक्ति स्वरुपा है श्रद्धा है, विश्वास है, दूसरी ओर अबला है, ताड़न की अधिकारी है। ये दोहरे मापदण्ड उसके विकास का मार्ग अवरुद्ध कर, विरोधाभासी स्थिति को उकरते हैं। रामायण की सीता पति की अनुगामिनी रही पर निष्काषित हुई तो उसी के पति द्वारा। अहिल्या को उसके नैतिकता व मानवता के पुजारी ऋषि गौतम ने उस अपराध के लिए पत्थर बन जाने का आदेश दिया, जो उसका था ही नहीं। परशुराम अपने पिताश्री के कहने पर माँ का सिर धड़ से अलग कर श्रेष्ठ व आज्ञाकारी पुत्र के रुप में प्रशंसित हुए। आखिर ये विचार किन पूर्वाग्रहों से ग्रसित हैं और अमानवीयता का परिचायक हैं। प्रकृति, समुद्र, नदियाँ, सूर्य और चाँद की रोशनी को स्त्रीपुरुष समान से भोगते हैं और सहते हैं। उन्होंने कभी पृथकता की भावना को प्रदर्शित नहीं किया, फिर समाज में इस तरह के विरोध का क्या कारण हैं ? आदर्श की बातें सभी को अच्छी लगती है, किन्तु क्या किसी ने पृथ्वी से पूछा कि उसके भीतर सदियों से कौन सा लावा खौल रहा है ? एक ही धुरी पर घूमते-घूमते क्या स्वतंत्र विचरण की चाहत कभी पैदा नहीं हुई ? नारी और पुरुष दोनों ही सृष्टि की धुरी है, एक के बिना दूसरे का अस्तित्व नहीं है।

आधुनिक युग नई सोच का है। यूं भी महिलाओं की स्थिति के बारे में किसी भी समाज में परिवर्तन लाने के लिए दशक कम है। कम से कम भारत में जहां पुरुषों की ताकत की जड़ें, भेदभाव के बीच ही मजबूत हुई हो, लेकिन नई शक्तियों के आगमन ने एक नई वैचारिक क्रांति को जन्म दिया है। अपने प्रति स्थापित रुढ़ धारणाओं को कि महिला तर्कहीन, प्रतिभाहीन और अयोग्य है, तोड़ने में न केवल पहल की है, बल्कि निर्णयात्मक दृष्टि से एक बौद्धिक चिन्तक, समर्पित व निष्ठावान कार्यकर्ता व मजबूत ईकाई के रुप में स्वयं को प्रतिष्ठित भी किया है।

विवेकानन्द ने कहा भी था कि ''पश्चिम की नारी पहले पत्नी है, फिर माँ, जबकि भारत में नारी पहले माँ है फिर पत्नी'' आधुनिक व्यवस्था इन विरोधाभासों को नए कलेवर में प्रस्तुत करती है और हमारी संवैधानिक और कानूनी स्वतंत्रता पर प्रश्नचिह्न। वस्तुतः व्यावहारिक तौर पर आजादी तो है, पर अदृश्य अप्रकट। वर्जीनिया वुल्फ के शब्दों में ''दुर्भाग्य से हमारी पाठशालाओं का पहला पाठ ही स्त्री विरोधी है, जिसमें राम स्कूल जाता है और राधा खाना बनाती है।''

महिलाओं के विकास के इस कदम ने पितृसत्तात्मक समाज की नींव को प्रभावित किया, परिणामस्वरुप स्त्री विमर्श, नारी मुक्ति, स्वातंत्र्य जैसे मुद्दे सामने आए, जिसमें महिलाओं के साथ पुरुष भी सहभागी हुए। भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया, उदारीकरण, वैश्वीकरण ने स्त्री के समक्ष विज्ञापन, सौन्दर्य और बाजार का एक नया स्वरुप रखा, जिसे मीडिया और जनसंचार के साधनों से प्रसारित किया। विकास विकास न होकर फैशन के रुप में दृष्टिगोचर हुआ और महिलाएँ व्यक्ति के साथ-साथ वस्तु के रुप में स्थापित होने लगी। परिणामस्वरुप स्त्री विमर्श आम न होकर समृद्ध महिलाओं के संसार से जुड़ने लगा। अंतर्विरोधों से भरे संसार में महिलाओं का अपना स्वततंत्र अस्तित्व मात्र प्रदर्शन रह गया। स्त्री विमर्श सिर्फ एक विलाप की तरह है, जहां सब मिलते हैं, विलाप शुरु हो जाता है कि नारी पीड़ित है। उसके साथ अत्याचार व शोषण हो रहा है। ऐसा विमर्श व्यर्थ है। जहां बोलने की आजादी तो है, पर आवाज नहीं, निर्णय लेने की स्वतंत्रता है, पर वस्तुतः निर्णय ले नहीं सकती और न लेने दिया जाता है। नारी मुक्ति आंदोलन चल रहे हैं, महिला दिवस मनाए जाते हैं - एक फैशन की तरह, क्योंकि जिस देश का एक बड़ा हिस्सा ग्रामीण परिवेश में रहता हो, उसके समक्ष स्त्री विमर्श व मुक्ति की बात कुछ अजीब सी लगती है, क्योंकि ग्रामीण महि ाओं की भागीदारी कार्य के क्षेत्र में बहुत पुरानी है, वे पुरुषों के समकक्ष खेती व लघु कार्यों में

हाथ बटाती चली जा रही है। इन तमाम अवसरों पर उनकी प्रतिभागिता आज नगण्य है। शहरी महिलाओं की कार्यक्षेत्र में प्रतिभागिता एक नई घटना अवश्य है। प्रति दशक इन महिलाओं की भागीदारी के आंकड़े बढ़ते जा रहे हैं। महिलाओं की कार्य के क्षेत्र में प्रवेश के आंकड़ों का बढ़ना इस बात का परिचायक नहीं कि जो महिलाएँ कामकाजी हैं, वे तमाम बेड़ियों से मुक्त हैं, उनकी प्रगति हर क्षेत्र में एक सी हो रही है। आज भी विरोधाभास मौजूद है, विरोधी मान्यताएं आज भी हैं।

हम जानते हैं कि भूमिकाओं के आकाश में आज महिलाओं ने नई-नई पहचान बनाई है। परिवार की सुरक्षा से लेकर देश की सुरक्षा का कार्य बखूबी अंजाम दे रही है। राजनीति केक्षेत्र में, भले ही आज उनके आरक्षण और प्रतिभागिता को लेकर प्रश्नचिह्न मौजूद हों, तथापि ऊँचे से ऊँचे पद का दारोमदार संभालकर नए उदाहरण पेश कर रही है। पहली प्रधानमंत्री, पहली पायलट, पहली महिला पुलिस कमिश्नर और भी न जाने क्या; क्या पहली की भूमिका हमारे लिए मिसाल है। पर आज भी यह मुद्दा अनुत्तरित है कि महिलाओं की दोहरी भूमिका को समाज विवेकपूर्ण तरीके से विचार कर, कब प्रतिष्ठित करेगा। विवेकानन्द ने कहा भी था कि "पश्चिम की नारी पहले पत्नी है, फिर माँ, जबकि भारत में नारी पहले माँ है फिर पत्नी" आधुनिक व्यवस्था इन विरोधाभासों को नए कलेवर में प्रस्तुत करती है और हमारी संवैधानिक और कानूनी स्वतंत्रता पर प्रश्नचिह्न। वस्तुतः व्यावहारिक तौर पर आजादी तो है, पर अदृश्य अप्रकट। वर्जीनिया वुल्फ के शब्दों में "दुर्भाग्य से हमारी पाठशालाओं का पहला पाठ ही स्त्री विरोधी है, जिसमें राम स्कूल जाता है और राधा खाना बनाती है।"

यही नहीं हमारे सांस्कृतिक मूल्य भी किसी हद तक इन अंतर्विरोधों को व्यक्त करते हैं। कहानियों में राजकुमारी कैद है और उसे छुड़ाने वाला राजकुमार। आवश्यकता इस बात की है कि सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक विभेदों को दूर किए बिना स्त्रियों की स्थिति का अवलोकन केवल औपचारिकता होगी। जब तक राम एवं राधा साथ-साथ स्कूल नहीं जाएंगें। हैसल एण्ड ग्रेटर की कहानी की तरह कि चुड़ैल द्वारा कैद गए भाई को बहन अपनी बुद्धिचातुर्य से छुड़ाती है, वाली मानसिकता को लाना होगा, तभी स्त्री विमर्श सार्थक होगा। सिद्धांत और व्यवहार का अंतर दूर होगा तभी प्रकृति का समभाव सही मायनों में परिलक्षित होगा। ■

संदर्भ :

1. Women in modern India Bombay : Neera Desai, Vora & Co. Publishers P.Ltd. 1957. 2.Indian Women in Transition : Gold Steim, Radha L., Matoo Chain, N.J.D. Scartcro Processings 1972. 3. Women work in India "Studies in employment and stauts 1990" : Veena Majumdar 4. Certificate course of women Empowerment and Development IGNOU, New Delhi- Part 1 to 4 : IGNOU, CWD.

सहायक प्राध्यापक,
शासकीय महाविद्यालय, वैशालीनगर

पृष्ठ 46 का शेष

7. सीमा विवाद- चण्डीगढ़ का राजधानी परियोजना क्षेत्र और सुखना ताल पंजाब को दिए जाएंगें। संघ राज्य प्रदेश के अन्य पंजाबी भाषी क्षेत्र पंजाब को तथा हिन्दी भाषी क्षेत्र हरियाणा को दिए जाएंगें। पंजाब के हिन्दी भाषी क्षेत्रों का पता लगाने का काम एक आयोग करेगा। ये हिन्दी भाषी क्षेत्र हरियाणा को चण्डीगढ़ के बदले में दिए जाएंगें। ऐसे किसी निश्चय के लिए गांव को एक इकाई माना जाएगा। आयोग 31 दिसम्बर 1985 तक अपनी रिपोर्ट दे देगा, जो दोनों पक्षों को मान्य होगी। आयोग का काम इसी पहलू तक सीमित होगा तथा सीमा संबंधी दावों से अलग होगा, जिस पर एक अन्य आयोग विचार करेगा। पंजाब को चण्डीगढ़ और उसके बदले हरियाणा को दिए जाने वाले क्षेत्रों का हस्तांतरण एक साथ 26 जनवरी 1986 को होगा।

8. नदी जल का बंटवारा- पंजाब, हरियाणा तथा राजस्थान के किसानों को रावी-व्यास नदी से पहले की तरह सिंचाई तथा अन्य उपयोग के लिए पानी मिलता रहेगा। इस पानी की मात्रा वही होगी, जो 1 जुलाई 1985 को थी। बाकी पानी के संबंध में दोनों राज्यों के दावे एक न्यायाधिकरण को सौंपे जाएंगें। इस न्यायाधिकरण की अध्यक्षता उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश करेगें। न्यायाधिकरण 6 महीनें में अपनी रिपोर्ट दे देगा और इसका निर्णय दोनों पक्षों को मानना होगा। सतलज तथा यमुना को जोड़ने वाली लिंक नहर का निर्माण कार्य जारी रहेगा। इसे 15 अगस्त 1986 तक पूरा कर लिया जाएगा।

9. अल्पसंख्यकों का प्रतिनिधित्व- अल्पसंख्यकों के हितों की रक्षा संबंधी वर्तमान निर्देश एक बार फीर सभी मुख्यमंत्रियों को भेजे जाएंगें।

10. पंजाबी भाषा को प्रोत्साहन- संघ सरकार पंजाबी भाषा को प्रोत्साहन देने के लिए कुछ कदम उठा सकती है।4 स्वायत्ता के सैद्धांतिक विवेचन के बाद हम इस निष्कर्ष पर आते हैं कि बहुत अधिक स्वायत्ता, प्रभावी राज्य के हित में नहीं होगी। विशेषतः उस परिस्थिति में जब इसके कारण संघ असंगठित होता हो। संयुक्त राज्य अमेरिका का उदाहरण हमारे सामने हैं, जहां अभिसंघ को संघ में बदलना पड़ा और अब अधिक शक्तिसंपन्न केन्द्रोन्मुखी प्रवृत्तियाँ स्पष्ट हो रही है। सामाजिक-राजनीतिक यथार्थ स्वप्निल कल्पना से भिन्न होता है। संघीय प्रणाली वह साधन है, जिसके माध्यम से एक बड़े राज्य में केन्द्रीकृत अधिकारी तंत्र की विसंगतियों को दूर किया जाता है। यह समस्तरीय सरकार का साधन नहीं है। केवल स्वायत्ता भी अच्छी प्रभावी सरकार का आश्वासन नहीं है, जहां लक्ष्य सत्ता-ग्रहण है, इसकी उपयुक्तता पर प्रश्न चिन्ह है। एक सामान्य व्यक्ति इस बात में रुचि रखता है कि उसे क्या प्राप्त हो रहा है, परंतु कौन उपलब्ध करा रहा है, यह उसके लिए गौण है। ■

संदर्भ :

1. भारतीय लोकतंत्र : धर्मचन्द जैन, प्रिंटवैल पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, जयपुर 2000। 2. भारतीय शासन एवं राजनीति : डॉ.पुखराज जैन, साहित्य भवन, आगरा, 2002। 3. भारतीय राजनीतिक व्यवस्था : पी.के.चड्ढ़ा, यूनिवर्सिटी बुक हाउस, जयपुर 2001। 4. 24 जुलाई 1985 का राजीव गाँधी-लोंगोवाल समझौते का दस्तावेज।

सहायक प्राध्यापक (राजनीति विज्ञान)
शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)